Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

समकालीन महिला उपन्यासकारों की कृतियों में स्त्री विमर्श

Kumari Lucy*

Research Scholar, Department of Hindi, Magadh University, Bodh Gaya

सार – आदि अनादि काल से इस दुनिमा में कई ग्रंथ लिखे गए हैं। उनमें वेद, पुराण के साथ रामायण, महाभारत आदि श्रेष्ठ तथा पवित्र ग्रंथ हैं। परंतु इन सभी ग्रंथी में स्त्री का पात्र अति महत्वपूर्ण ह। स्त्री की एक ओर देवी कहते हैं तो दूसरी ओर दासी। कभी-कभी भोग के वस्तु के रूप में दर्शाते हैं। किंतु यह स्त्री क्या है इस बात को आज तक कोई नहीं समझा, क्योंकि स्त्री अतुलनीय है। स्त्री के बाह्य रूप को सभी लोगों ने देखा परंतु उसके अंर्तमन को कोई नहीं पढ़ सका।

---------------------------------X--------------------------------

मत्र नार्मस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।

जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता बसते हैं। वैदिक साहित्य में नारी के उदात्त एवं विशेष व्यक्तित्व की अभिव्यंजना हुई है। समाज ने कर्तव्य और अधिकारों का बटवारा पुरुष और नारी में स्वभावतः रुचि और शक्ति के अनुकूल कर लिया था। इसलिए नारी के प्रति मनु का कथन है कि-

पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने।

रक्षंति स्थावरे पुना न स्त्री स्वातंत्रम मर्हति।।

अर्थात नारी जब कुँवारी रहती है, तब पिता के आश्रम में युवावस्था में पति के आश्रम में, बुढ़ापे में पुत्र के आश्रम में रहने के कारण नारी की स्वातंत्र नहीं है।

परिवर्तित इस समाज में स्त्री अपनी बुद्धि-शक्ति को प्रदर्शित करते हुए सभी क्षेत्रों में पदार्पण कर चुकी है। किंतु पुरानी परंपरा तथा दकियानूसी पद्धतियों से पूरी तरह कहर नहीं निकली है। क्योंकि पुरुष जैसा भी हो आज भी वह पति को परमेश्वर ही मानती है। किंतु पुरुष स्त्री को केवल जाना है, पर समझा नहीं। इस समाज में पुरुष से शोषित, पीड़ित, अपमानित नारी अपने अस्तित्व की तलाश कर रही है। क्मोंकि भारतीय स्त्री का हृदम ममता, सेवा, दमा, त्याग, क्षमा आदि गुणों से भरा हुआ है। इस के बदले में उसको अपमान तथा शोषण को सहना पड़ता है।

पुरुष से उपेक्षित स्त्री अपना अस्तित्व बनाए रखना चाहती है। समाज में मान-सम्मान के साथ पुरुष की बराबरी करने के लिए स्त्री शिक्षित होकर आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी हो चुकी है। हिंदी कहानी साहित्म में स्त्री के विविध पहलुओं को उजागर किमा गमा है। स्त्री माँ, बहन, पत्नी, सास, सहेली, प्रेमसी, भाभी, बेटी, बहू आदि के रूप में पुरुष के जीवन से जुड़ी हुई है। इस परिवर्तनशील समाज में आज भी स्त्री सुरक्षित नहीं है। दयनीय अवस्था, कामभावना, पुरुष द्वारा शोषण आदि समाज में घटनेवाली समस्माओं का सामना करती हुई जी रही है। पुरुष प्रधान समाज में आज नारी रुढ़ियाँ को तोड़कर मुक्त रूप से जीने की जिजीविषा रखती है। भारतीय समाज व्यवस्था में दमित स्त्री समाज में उभरकर आना चाहती हैं। इसलिए पुरुष की पराधीनता तथा दासता को ठुकरा दिया। और अपने विचारों को मन की दृढ़ता के साथ अभिव्यक्त करने का साहस करने लगी। आज की नारी अन्याय सहनेवाली नहीं है। वह अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो गई है। आधुनिक स्त्री शिक्षित होने के कारण वह अपना निर्णम लेने के लिए सक्षम है।

प्रेमचंद युग में नारी की सामाजिक वैवाहिक रुढ़ियाँ, विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा, पर्दा प्रथा, नारी पुरुष में समान आदि में अधिक परिवर्तन हुए। आज स्त्री व्यावहारिक जीवन को ही महत्व देती है। पुनर्जन्म पर विश्वास नहीं करती है। और न ही सात जनम में पति का संबंध वाली बात को मानती है।

सभ्यता के विकास के साथ नारी की उन्नति की दिशाएँ बदली है, लेकिन संस्कारवश स्त्री आज भी समर्पण की प्रतिमूर्ति बन जाती है। घर में छोटी छोटी खुशियाँ से ही अपने जीवन को सार्थक समझती है। प्रेमचंदजी की बड़े घर की बेटी कहानी में

आनंदी ससुराल में अपने देवर से अपमानित होकर भी उसको कुछ नहीं कहती है। उसको माफ कर देती है। आनंदी के देवर ने गुस्से से खड़ाऊँ उठाकर फेंकी तो आनंदी अपना घर बचालेती है। किंतु उंगली में बड़ी छोट आती है। गालियाँ भी खाती है। अन्याय होने पर भी उसका विरोध नहीं करती देवर को माफ कर देती है।

नारी आज केवल रमणी या पत्नी नहीं रही बल्कि घर के बाहर समाज का एक विशेष, अंग और महत्वपूर्ण नागरिक के रूप में प्रस्तुत हुई है। बदली हुई परिस्थितियों में नारी भले ही नौकरी करके आर्थिक सबलता प्राप्त की है। किंतु कामकाजी औरत के लिए नौकरी से खुशी से ज्यादा तनाव ही पैदा होता है। नौकरी करनेवाली स्त्री घर तथा बाहर दोनों परिस्थितियों में समन्वय स्थापित नहीं कर सकती। ऐसे समय उसको नौकरी छोड़नी पड़ती है या तनाव की स्थिति में जीवन बिताना पड़ता है। आधुनिक स्त्री के सामने कई समस्माएँ थी जिसके कारण उसे कामकाजी बनना पड़ा।

कामकाजी बहन अपनी सभी इच्छाओं आकांक्षाओं को मारकर पारिवारिक समस्माओं में उलझ जाती है। परिवर्तन के इस संद्धों में बहन का रिश्ता औपचारिक बनते जाता है। उषा प्रियंवदा की जिंदगी और गुलाब के फूल कहानी की वृंदा कामकाजी स्त्री है। स्त्री जब नौकरी करने लगी तो वह न केवल आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी हुई वरन माता-पिता तथा छोटे भाई बहनों की जिम्मेदारियों को भी स्वीकार करती है। जिंदगी और गुलाब के फूल कहानी में सुबोध जब तक कमाता था परिवार का संचालन वही करता था। किंतु जबसे बेकार बैठता है तब बहन कमाने लगती है और घर वही चलाती है तब भाई बहन का रिश्ता भी खोखला लगता है। पुरुष प्रधान समाज में नारी की सत्ता का बोध बूंदा के पात्र से कराया गया है। इसलिए कहते हैं कि आज का समाज न तो पुरुष प्रधान है, न नारी प्रधान वह है मात्र अर्थ प्रधान। जहाँ स्त्री नौकरी करते हुए अपनी इच्छाओं को दमन कर के जीती है, तो दूसरी और बेटे की खुशी के लिए अपमान भी सहलेती है।

भीष्म साहनी की कहानी चीफ की दावत में एक बूढ़ी औरत अपने बेटे के लिए अपमान सह कर भी उसकी भलाई के बारे में सोचती है। कहानी का नायक मि. एमामनाथ अपने पदोन्नति पाने के लिए अपने चीफ को दावत के लिए घर बुलाते हैं। किंतु घर सजाते समम माँ को सबसे बड़ी अड़चन मानकर उसको घर से हटाने के लिए सोचते हैं नहीं होता तो डांटकर चीफ के सामने अच्छी तरह से पेश आने के लिए कहते हैं। किंतु वही काँपती हुई माँ का व्यक्तित्व और उसकी फुलवारी चीफ को अच्छे लगते हैं। बेटे की पदोन्नति के लिए माँ की आँखे स्पष्ट दिखाई न ऐसे पर भी फुलवारी बनाना उसे महान बनाता है।

आज के युग में नारी हर एक क्षेत्र में काम कर रही है। वैसे ही राजनीति में भी पीछे वहीं है। इस क्षेत्र में मंत्री भी बन चुकी है। उदाहरण के लिए खरीदार कहानी की नायिका नीना है। नीना की माँ बेटी की शादी के लिए २०००० रुपए दहेज देना चाहती है, किंतु नीना बिल्कुल दहेज का विरोध करती है और अपनी माँ से स्पष्ट रूप से कहती है कि मैं यह शादी नहीं करूँगी। नीना स्वमं अविवाहित रहकर दहेज लेनेवालों के। मूँहतोड़ जवाब देना चाहती है। आत्मविश्वास के साथ परिश्रम कर आए. ए.एस पास करनी है। इसके उपरांत पदोन्नति पाकर वह गृहमंत्रालय में संयुक्त सचिव के पद पर पहुंचती है। आज नीना के पास सब बुछ है तो लड़के बदसूरत नीना से विवाह करने के लिए उसके पीछे घूमते हैं।

मन्नू भंडारी की ईसा के घर इंसान मनोवैज्ञानिक कहानी है। यह एक ऐसे कालेज की कहानी है, जहाँ फादर, मदर, टिचर्स सभी को नियम का पालन करना तथा नियम उल्लंघन की सजा भी भुगतनी पड़ती है। लेकिन सिस्टर एंजिला कड़े नियम की सख्ती से विद्रोह करती है। मन्नू भंडारीजी का संकेत उस कालेज में पड़नेवाली नर्सो की मानसिक स्थिति की ओर है। एंजिला कहती है कि मैं नहीं रहूंगी यहां मैं कभी नहीं रहूंगी देखो मेरे रूप को। मैं अपनी जिंदगी को, अपनी सूरत को चर्च की दीवारों के बीच नष्ट नहीं होने दूंगी। आदमी की तरह जिंदा रहना चाहती हूँ। मैं इस चर्च में घुट-घुटकर नहीं मरूंगी, मैं भाग जाऊँगी नारी के सच्चे रूढ़िमुक्त स्पंदन को इस कहानी में चित्रित किया है। उसका दंद्व वर्तमान विषम परिस्थितियों से विद्रोह की दृष्टि से सार्थक सिद्ध हुआ है।

उपसंहार:

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष सी बहा करो, जीवन के सुंदर सम तल में।।

प्रसाद जी ने नारी के लिए ऐसा कहा था। अर्थात स्त्री को अपनी विचारों को व्यक्त करने का स्वातंत्रा नहीं था। किंतु आज सी बिल्कुल बदल चुकी है। आज स्त्री शिक्षित होने कारण अपने विचारों को मुक्त रूप से व्यक्त करने लगी है। पुरुष के साथ-साथ स्त्री भी आज सभी क्षेत्रों में पदार्पण कर चुकी है। नारी के विविध पहलुओं को हिंदी साहित्य के सभी विधाओं में चित्रित किया गया है। इसलिए हिंदी साहित्य में स्त्री का पात्र महत्वपूण हैं।

www.ignited.in

नारी समाज की सृष्टिकर्ता है अर्थात जन्मदात्री है। वह माता पुत्री, बहु, बहन, प्रेमिका मित्र जैसे रूपों की अधिष्ठता हैं। भारतीय परंपरा में उसे दुर्गा, काली, लक्ष्मी, सरस्वती आदि दैवी रूपों के समान देखा जाता है। वेदों एवं शास्त्रों में वह पूज्मनीय हैं। इन सबके बावजूद आज व्यवहारिक धरातल पर समाज में स्त्री का स्थान निम्नस्तरीय ही रहा है।

२१ वीं सदी में स्त्री-विमर्श एक स्वतंत्र विकसित विमर्श के रूप में उभर के सामने आया है। वर्तमान काल में विमर्श के साथ दो शब्द बढ़ी दृढ़ता से जुड़े हुए दिखाई देते हैं-स्त्री और दलित। आज हम आधुनिक युग में महिला सशक्तिकरण, नारी आत्मसम्मान, नारी मुक्ति, नारी आस्मता एवं नारी के समान अधिकारों की बात करते हैं किंतु आज भी नारी की स्थिति गंभीर है। आज भी वह सभी तरह के शोषण की प्रतीक है जिसके पीछे निहित कई कारण तथा मानसिकता है। स्त्री को अपने अस्तित्व के बोध ने विमर्श की प्रेरणा दी। आत्मसमर्पण और पुरुष की एकाधिकारी माहौल से स्त्री को बाहर लाने का श्रेम स्त्री विमर्श को ही दिया जा सकता है।

नारी आस्मता की पहचान, स्व की चिंता, आस्मता बोध और अधिकार जताने व बतलाने का विचार चिंतन ही स्त्री-विमर्श कहलाता है। सदियों से होते आये दमन एवं शोषण ने ही स्त्री विमर्श को जन्म दिमा है। सुप्रसिद्ध लेखिका मृणाल पांडे के अनुसार नारी विमर्श कतई स्त्रियों के वृहतर समाज से अलग-अलग रखकर देखने और हर क्षेत्र में पुरुषों खिलाफ उन्हें प्रोत्साहित करने का दर्शन नहीं है, यह तो एक समग्र दृष्टिकोण है।

हजारों सालों से पितृसत्तात्मक मनःस्थिति का भोग बनी स्त्री आज मुक्त होना चाहती है। वह उस जमीन की तलाश में है जिसमें पुरुष-प्रधान मनःस्थिति की बू नहीं आती हो। आज का स्त्रीवादी साहित्य इसी प्रस्तुत का प्रमाण है। स्त्री को मानवीय बनाना स्त्रीवादी साहित्य का महत्वपूर्ण उदेश्य है। वर्तमान स्त्रीवादी रचनाकारों ने स्त्री की मानसिकता को बड़ी सुक्ष्मता से जाना-पहचाना और उसे अपने लेखन में स्थान भी दिया। पुरुष एवं महिला रचनाकारों में स्वमं महिलाएँ अपनी आस्मता को उजागर करे में प्रतिबद्ध हुई हैं।

हमारे देश में स्त्री चिंतन की शुरुआत मुख्म रूप से स्वतंत्रता आंदोलन से होती है किंतु इसके बीच वैदिक युग से ही देखने को मिलता है। वैदिक युग में ही स्त्री अपनी अस्तित्व का प्रश्न उठाती हुई दिखाती है। वैदिक ऋषिका रोमशा कहती है-हे पति राजन। जैसे पृथ्वी राज्याधारण एवं रक्षा करनेवाली होती है वैसे ही मैं प्रशंसित रोमों वाली हूँ। मेरे सभी गुणों को विचारों मेरे कामों को अपने सामने छोटा न मानो। हिंदी साहित्य के आधे इतिहास की लेखिका डॉ. सुमन राजे के अनुसार संभवतः यह पहला प्रमाण है जब किसी स्त्री ने अपनी क्षमता के मूल्मांकन का समान अधिकार प्राप्त करने के लिए आवाज उठाई है।

स्त्री की स्थिति सुधार को लेकर सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में चल रहे आंदोलनों का व्यापक प्रभाव हिंदी साहित्यकारों पर पड़ा। महिला उपन्मासकारों के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श से जुड़े विविध पहलुओं का अध्ययन करना ही इस आलेख का उद्देश्य है। आज की प्रमुख महिला उपन्यासकारों में राजी सेठ, उषा प्रियंवदा, मृदला गर्ग, कृष्णा सोबती शुभा वर्मा, मैत्रेमी पुष्पा, मेहरूनिसा परवेज, प्रभा खेतान तथा मृणाल पांडे के उपन्ययासों में स्त्री चेतना, स्त्री मुक्ति, शोषण, समानता, स्वतंत्रता, वैवाहिक एवं पारिवारिक समस्या, आर्थिक पराधीनता एवं स्वाधीनता जैसे स्त्री विमर्श से जुड़े हुए कई पक्षों के उजागर किया है।

महिला उपन्मासकारों में अग्रणी लेखिका राजी सेठ के उपन्यास तत्सम में पितृसत्तात्मक व्यवस्था के साये में उपन्यास की नायिका वसुधा का द्वंद है। तत्सम शब्द का अर्थ और प्रतीकार्म है-उसे जो उसके समान है ढूढ़ना। इस मात्रा में वसुधा को अजीब-अजीब तरह के अनपेक्षित सुख दुख से भरे हुए दारुण अनुभवों से गुजरना पड़ता है। वसुधा के सामने अजीब सी स्थिति, एक अजीब सा द्वंद है। वह मायके आ जाती है, विश्वविघालय में नौकरी करने लगती है। पर वह कोई सामान तो नहीं, जिसे बदल दिया जाए मा फिर एक स्थान पर रख दिया जाए। वसुधा को उसका पति शरत एक जीती-जागती जिंदगी मानता है। उसका तर्क है कि जूता टूट गया दूसरा ले आओ, घड़ी बिगड़ गई दूसरी खरीद लो, कपड़ा फट गया फिर सिलवा लो और यह जीती जागती जिंदगी। अरे सारे कायदे कानून सारी रोक-टोक जिंदगी को डुबोने के लिए ही है... एक उसे ही नाकाम कर देने के लिए। वसुधा का आनंद में रुचि लेना इसकी परिणति है।

रुढ़ियों और परंपराओं ने स्त्री को चारदीवारों में केद कर दासी की भूमिका दे दी है। उसी दायरे को लेकर लिखनेवाली उषा जी का एक नई विचारधारा से लिखा गया रोचक उपन्यास अंतर्वशी है। इसकी नायिका वाना एक अति साधारण परिवार की लड़की है जो माँ के अभाव में गरीब पिता व बाबुओं के संरक्षण में पतली है। वह मात्र दसवीं तक पढ़ी है लेकिन उसकी शादी अमेरिका में निवेश के साथ कर दी जाती है। रूप और सौंदर्म के सिवा उसके पास कुछ भी नहीं। उपन्यास के अनुसार-बुद्धिहीन सुंदर स्त्री क्या है, अलोनी छुड़मा। इस प्रकार उषा जी द्वारा रचित उपन्यास में नारी मुक्ति एवं नारी स्वातंत्रा से जुड़े महत्वपूर्ण प्रश्न उठाए गए हैं।

मृदला गर्ग के उपन्यास कठगुलाब में भी नारी मुक्ति एवं चेतना का प्रखर रूप सामने आता है। इस उपन्यास में दो नारिमाँ असीमा तथा स्मिता ने मिलकर सहकारी संस्था का निर्माण किया परंतु पुरुष वर्ग उनके इस कार्म में सहयोग नहीं करते है। असीमा पुरुष वर्ग की मानसिकता को अच्छी तरह जानती है। वह कहती है-इस देश में औरते या माँ है या पैर की जूती। इनसे काम कराने के लिए अम्मा बनना जरूरी है क्या? असीमा के माध्मम से मह स्वमं लेखिका का ही स्वर है जो स्त्री विमर्श की प्रबल प्रस्तुति करता है और सिर्फ मातृत्व को ही स्त्री जीवन की उपलब्धि मानने से इंकार करता है। कृष्णा सोबती के उपन्यास समय सरगम में स्वमं लेखिका बूढ़े होने की गरिमा के बीच भी जीवन का एक क्षण पूरी निजता से जी लेने की चाह एवं विचारों का गंभीर स्वर है। कृष्णा सोबती के सत्तर वर्षीय जीवन की जिंदादिली की कथा नामिका आरण्मा के चरित्र में स्पष्ट झलकती है।

शुभा शर्मा जी ने फ्रीलान्सर उपन्यास की इतनी प्रसिद्धि हुई है कि वह पाठकों के बीच ही नहीं बल्कि आलोचकों में भी धूम मचा गई। मह उपन्यास पत्रकारिता जीवन को केंद्र में रखकर लिखा गया है। लेखिका ने अपने जीवन के इस क्षेत्र को काफी नजदीकी से देखा है इसलिए इसमें घटनाएँ एवं पात्र सीधे जीवन से उठाए गए प्रतीत होते हैं। इस उपन्यास की प्रमुख पात्र शाहना चैधरी एक फ्रीलान्सर पत्रकार हैं जो अपना निजी जीवन भी मुक्त एवं स्वच्छंद पत्रकारिता की भाँति ही स्वच्छंदता से जीना चाहती है। भारतीम समाज में मुक्त पत्रकारिता के कार्म अविवाहित स्त्री के लिए अनेक कठिनाइमों से भरा है। यह क्षेत्र अपने अंतविरोधों, विडंबनाओं एवं विसंगतिमों से भरा है। इन सबके बावजूद नामिका बिना किसी दुराव के पूर्ण मनोबल के साथ उन्मुक्त जीवन शैली को अपनाती है। शुभा वर्मा नारी-चेतना एवं भावनाओं को बहुत आगे ले जाती हैं, जहाँ उसका व्यक्तित्व सबसे महत्वपूर्ण हो जाता है। वह समाज से अपना हक हासिल करती है, छीनती है किंतु घुट-घुट कर नहीं मरती है।

मैत्रेयी पुष्पा का लेखन स्त्री विमर्श में चेतना की मुखर अभिव्मक्ति द्वारा स्वतंत्र नारी की आस्मता और उसके सशक्तीकरण की एक जमीन तैयार करता है। उनके चर्चित उपन्यास इदन्नम की नायिका मंदाकिनी तथा अन्य स्त्री पात्रों के विरोधी चेतना के मूल में मंदा द्वारा बनामा गया सामंती ढाँचा है जो स्त्रिमों के अधिकारों का हनन करता है।

नारी शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने वालों में मेहरुन्निसा परवेज प्रमुख लेखिका हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्मम से नारी जीवन का जो चित्रण किया है, उससे यही स्थिति सामने आती है कि नारी का जीवन बंधनों से आज भी मुक्ति नहीं पा सका है। कोरजा उपन्यास की नायिका फातिमा की मही स्थिति है।

महिला उपन्यासकारों में स्त्री विमर्श की बात हो और मृणाल पांडेका नाम न आए तो बात अधूरी रह जाती है। इन्होंने विरुद्ध, रास्तों पर भटकते हुए, पटरंगपुर पुराण, देवी... उपन्यासों में नारी-चेतना के स्वर को प्रखर किमा है। उनके अनुसार आज का नारी लेखन हमारी मानसिक तुष्टि के लिए एक विस्फोट द्रव्य के समान है। हमारी शांति को भंग कर देनेवाला और कष्टदायक है। मह हमारी प्रचीन मान्यताओं और मानसिक जड़ता को गति देनेवाला एक ऐसी विध्वंसक शक्ति के रूप में प्रकट हुआ है, जो हमें फिर से नए निर्माण के लिए प्रेरित करता है। ...अति विलास, अति वैभव, अति सफलता और उसके लिए चुकाए जाते मूल्य, किए जाते घिनौने समझौते अन्नतः नारी को कितना खोखला, कितना कंगाल, कितना दयनीय बना देता हैं उसका मूर्तियन्त उदाहरण है स्त्री विमर्श।

प्रभा खेतान जी का छिन्नमस्ता उपन्यास भी काफी चर्चित रहा है। इस उपन्यास में मारवाड़ी परिवार की एक-एक युवती अपने ही घर में बेगाने होते जाते हैं। सभी भाई, पति द्वारा उत्पीड़ित किए जा रहे हैं। स्त्री उत्पीड़न की इस कथा को प्रभा खेतान ने बखूबी चित्रित किमा है। नारी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए महादेवी वर्मा कहती है कि वास्तव में नारी ही प्रेरणा शक्ति का नाम है और पुरुष संघर्ष शक्ति का। प्रेरणा और संघर्ष का संगम ही पूर्ण जीवन है। पुरुष का जीवन संघर्ष से आरंभ होता है ओर स्त्री का आत्मसमर्पण से।

समकालीन महिला उपन्यासकारों ने स्त्री विमर्श को एक आंदोलन के रूप में देखा है। स्त्री विमर्श से संबंधित उपन्यास अधिकतर नारी द्वारा ही लिखे गए है हालांकि पुरुषों द्वारा भी नारी चिंतन एवं आस्मता का स्वर उपन्यासों में ध्वनित होता है। स्त्री विमर्श के इस आंदोलन में स्त्री की शिकायतों, उसके प्रकट अप्रकट क्रोध, छिपे हुए आक्रोश तथा जीवन के प्रति उसके विशिष्ट दृष्टिकोण को अति महत्वपूर्ण बनाकर अभिव्यक्त किया गया है।

विवेच्य महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में स्त्री विमर्श से जुड़े सभी पक्षों को उजागर किया गया है। डॉ. प्रांजल पाठक ने स्त्री विमर्श पर प्रकाश डालते हुए कहते है कि औरतें स्त्रीवाद की न केवल कर्ता हैं, बल्कि वे ही शक्ति हैं और एक औरत के रूप में एक होकर स्त्रीत्ववाद के सत्ता विमर्श को अर्जित करना उसका सार है, क्मोंकि तभी वह कर्ता बन सकती है। स्त्री

www.ignited.in

विमर्श के संदर्भ में इस दृष्टिकोण को आज की महिला लेखिकाएँ सार्थक करती हुई प्रतीत होती है।

संदर्भ सूची

1. हिंदी गध का इतिहास-डॉ. रामचंद्र तिवारी
2. महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी-डॉ. हरवंश कौर
3. हिंदी उपन्यासों में आस्मता-रत्ना चटर्जी
4. तत्सम-उपषा प्रियंवदा
5. अंतर्वशी-उषा प्रियंवदा
6. फ्रीलान्सर-मृदुला गर्ग
7. इदननम-मैत्रेमी पुष्पा
8. छिन्नमस्ता-प्रभा खेतान
9. विरुद्ध-मृणाल पांडे
10. रास्तों पर भटकते हुए-मृणाल पांडे

Corresponding Author

Kumari Lucy*

Research Scholar, Department of Hindi, Magadh University, Bodh Gaya